फितनो के दौर मे ईबादत की फझीलत

हजरत मुफ्ती अहमद खानपुरी दब.

बिस्मिल्लाहीर रहमान्नीर रहीम

उन्वान हे के हालात के नाहम्वार और नामुनासिब होने और फितने के झमाने मे **अल्लाह** की इबादत करने की फझीलत.

अल्लामा नव्वी(रह) ने हिरज का तरजुमा इख्तेलात किया हे यानी मिलावत और अल्लामा अनवर शाह कश्मीरी(रह) हिरज का तरजूमा गडबड करते हे.

यानी जब हालात गडबड वाले हो जायें और नये नये फितने झाहिर हों तो चूंके आदमी अपने माहोल के ताबे होता हे इसलीये हालात की गडबड और फितनो की वजह से आदमी की तबीयत मे जो सुकुन रेहना चाहिये वो बाकी नही रेहता.

हालात का कुदरती नतीजा होता हे के आदमी टेन्शन मे रेहता हे लैकीन अगर कोयी आदमी हालात के नामुवाफिक और

नाहम्वार होने के बावजूद **अल्लाह** की इबादत और उस्के हुकूक की अदायगी मे किसी तरह की कोताही का मुरतकिब नही होता बल्के **अल्लाह** की इतात और फरमांबरदारी का सिलसिला पेहले से जो चला आ रहा हे उस्को बराबर बाकी और जारी रखता हे तो उस्की बडी फझीलत हे.

जब हालात आदमी के मिझाज और तबीयत के मुवाफिक हों उस वकत अगर कोयी आदमी **अल्लाह** को याद करता हे तस्बीह पढता हे तिलावत करता हे इबादत का एहतेमाम करता हे तो अगरचे ये भी बहुत बडी बात हे के **अल्लाह** ने तौफीक अता फरमायी हे लैकीन उन हालात मे चूंके आदमी की तबीयत और मिझाज के खिलाफ कोयी बात नही पायी जाती तो गोया उसने कोयी बहुत बडा मुजाहदा और मशक्कत का काम नही किया.

लैकीन जब बाहर के हालात तबीयत के खिलाफ और नाहम्वार हों उस ज़माने मे फितना और फसाद फेला हूवा हो आदमी की तबीयत मे सुकुन और इत्मीनान बाकी न हो ऐसी हालत मे कोयी आदमी अगर **अल्लाह** की इबादत करे अपने मामूलात की पाबन्दी का एहतेमाम करे जमात के साथ नमाज़ की पाबंदी करे नवाफिल और तिलावत का एहतेमाम जैसे पेहले करता रहा हे उस्को जारी रखे तस्बीहात और दुवाओं का एहतेमाम करे.

मतलब ये हे के मामूलात का सिलसिला जो पेहले से जारी था हालात की नाहम्वारी और गडबड की वजह से उस्मे कोयी खलल न पडने दे तो ये भी बडी फज़ीलत की चीज़ हे इसी को इस बाब मे बयान करते हे.

हज़रत माकल बिन यसार(रदी) फरमाते हे के **नबी करीम** صلى الله عليه وسلم ने इरशाद फरमाया हालात के नामुवाफिक होने गडबड और

फितनो के झमाने मे **अल्लाह** की इबादत करना ऐसा हे जैसा हिजरत करके मेरे पास हाजरी देना. (मुस्लीम/१३६६)

जब **नबी करीम** صلى الله عليه وسلم हिजरत करके मदीना मुनव्वरा तशरीफ ले गये उस झमाने मे मक्का का रेहने वाला कोयी आदमी अगर इमान लाता तो उस्के इमान की तकमील और कबूलीयत उस बात पर मौकूफ थी के वो भी हिजरत करके **नबी करीम** صلى الله عليه وسلم के पास मदीना मुनव्वरा हाजिर हो सिर्फ कलिमा पढकर वही रेह जाना काफी नही समझा जाता था.

तो जैसे उस झमाने मे जो लौग इमान लाने के बाद **नबी करीम** صلى الله عليه وسلم की खिदमत मे हाजरी देते थे आप के पास कियाम और रहाइश इख्तीयार करते थे झाहिर हे के वो बडी फझीलत की चीझ थी.

इसी तरीका से कोयी आदमी हालात की गडबडी और फितना के झमाने मे अगर

अल्लाह की इबादत और इताात का एहतेमाम करता हे तो उसको वही सवाब मिलेगा.

इलाज ही हम छोड देते हे

हमारे मिलने वाले दोस्त अहबाब जब अपने हालात बताते हे तो हम उन्से पूछते हे के मामूलात अदा करते हो? तो वो जवाब मे केहते हे दरअसल मे हालात मे फंस गया हूं इसलीये मामूलात छूट गये मे उन्से केहता हूं के इन हालात का इलाज तो यही मामूलात हे.

आपने हालात का जो इलाज था वही छोड दिया ये तो ऐसा हूवा के किसी को कहा जाये के भाइ दवा खालो और वो कहे के मोलवी साहब कया करूं बीमारी बहुत सख्त हो गयी हे इसलीये दवा छोड दी तो उन्से यही कहा जायेगा के बीमारी अगर सख्त हो गयी तो फिर दवा और जीयादा एहतेमाम से खानी चाहिये.

इसी तरह अगर आप हालात का शिकार हो गये तो उस्का इलाज यही हे के **अल्लाह** की तरफ रूजू और निस्बत झियादा हो.

अल्लाह से खूब मदद मांगी जाये जब ये हालात हमारे इख्तीयार के हे ही नही हम उन्का कोयी इलाज कर ही नही सकते और उन पर काबू भी नही पा सकते उन्को काबू मे लाने वाली झात जब वही हे तो उसी के सामने रोवो और रूजू करो.

लैकीन हमारा हाल ये हे के जो इलाज हे उसी को हम छोड देते हे तो फिर हमारे हालात और झियादा संगीन शकल इख्तीयार कर लेते हे.

इसलीये हमारे दोस्त और अहबाब जब ऐसी बाते करते हे के मुज पर हालात आ गये कारोबार ठप हो गया घर वाले और बच्चे सख्त बीमार हो गये तो में उन्से कहा करता हूं के आप पर हालात आये तो मामूलात और

ज़ियादा करो **अल्लाह** की इताात और फरमांबरदारी ज़ियादा करो जब **अल्लाह** की इबादत मे मशगूली इख्तीयार करोगे और दुवाए करोगे तो ये सब हालात **अल्लाह** ही दूर करेगा.

लैकीन जो असल था वो तो आप ने छोड दिया और दुनीयवी तदबीरे जिन से कुछ होता नही हे वो भी आप से पूरी नही हो पा रही हे.

इस्तेकामत हालात के अंदर मामूलात अदा करने की मख्सूस फज़ीलत हे.

चूंके ऐसे हालात मे आदमी अपनी तबीयत मे एक किसम की बेचेनी मेहसूस करता हे जिस्की वजह से बाज़ मरतबा आदमी **अल्लाह** की इबादत छोड बेठता हे जैसा के आम तौर पर देखा जाता हे.

इसलीये उस्की फज़ीलत बतलाने के लिये खास ये बाब काइम किया और इस्मे बतलाया गया के ऐसे हालात मे अगर आप

इबादत का एहतेमाम करते हे जैसे जमाअत के साथ नमाझों का और झिकरो तिलावत तसबीहात और गुनाहों से बचना वगैरा इस मे झररा बराबर कोताही नही करते तो यही चीझ आप के दीन पर मझबूती से जमे रेहने की अलामत हे और यही इस्तेकामत केहलाती हे.

ऐसा नही होना चाहिये के हालात आ गये तो नाउम्मीद होकर घर मे बेठ गये अब मस्जीद मे भी हाजरी नही देते नमाझ भी नही पडते तिलावत भी नही होती ऐसे ही पडे हूये हे ये तरझे अमल तो हालात को और झियादा खतरनाक बनाने वाला हे.

हवाला- हदीस के इस्लाही मज़ामीन उर्दू से इसका लिप्यान्तरण किया है. (नोट- यह दरस का खुलासा हे)